

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
मांग संख्या 23
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

(₹ करोड़)

	वास्तविक 2019-2020			बजट 2020-2021			संशोधित 2020-2021			बजट 2021-2022		
	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़
कुल	1620.39	105.21	1725.60	1902.44	172.00	2074.44	1229.48	74.90	1304.38	1738.69	163.00	1901.69
वसूलियां	-13.73	...	-13.73	-4.44	...	-4.44	-4.38	...	-4.38	-4.56	...	-4.56
प्राप्तियां
निवल	1606.66	105.21	1711.87	1898.00	172.00	2070.00	1225.10	74.90	1300.00	1734.13	163.00	1897.13
क. वसूलियों को घटाने के बाद बजट आबंटन इस प्रकार है:												
केंद्र का व्यय												
केन्द्र का स्थापना व्यय												
1. सचिवालय	36.75	...	36.75	44.00	...	44.00	35.86	...	35.86	42.00	...	42.00
2. मौसम विज्ञान	416.85	...	416.85	443.44	...	443.44	415.28	...	415.28	442.72	...	442.72
	-1.19	...	-1.19	-4.44	...	-4.44	-4.38	...	-4.38	-4.56	...	-4.56
<i>निवल</i>	<i>415.66</i>	...	<i>415.66</i>	<i>439.00</i>	...	<i>439.00</i>	<i>410.90</i>	...	<i>410.90</i>	<i>438.16</i>	...	<i>438.16</i>
3. समुद्रविज्ञानीय सर्वेक्षण (ओआरवी तथा एफओआरवी) तथा समुद्र सजीव संसाधन (एमएलआर)	29.61	...	29.61	35.00	...	35.00	9.00	...	9.00	25.00	...	25.00
4. राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र (एन.सी.एम.आर.डब्ल्यू.एफ.)	9.96	...	9.96	13.20	...	13.20	10.60	...	10.60	12.80	...	12.80
जोड़-केन्द्र का स्थापना व्यय	491.98	...	491.98	531.20	...	531.20	466.36	...	466.36	517.96	...	517.96
केन्द्रीय क्षेत्र की स्कीमें/परियोजनाएं												
5. समुद्री सेवाएं, प्रौद्योगिकी, प्रेक्षण, संसाधन मॉडलिंग तथा विज्ञान (ओ.स्टोर्म्स)
6. समुद्री सेवाएं, मॉडलिंग, अनुप्रयोग, संसाधन और प्रौद्योगिकी (ओ-स्मार्ट)	424.27	11.23	435.50	550.00	17.00	567.00	230.50	8.00	238.50	421.17	15.00	436.17
7. वायुमंडल और जलवायु अनुसंधान-मॉडलिंग प्रेक्षण प्रणालियां तथा सेवाएं (एकरॉस)	273.22	82.02	355.24	310.00	130.00	440.00	174.00	53.90	227.90	337.00	123.00	460.00
8. ध्रुवीय विज्ञान और क्रायोस्फेयर (पेसर)	109.98	...	109.98	125.00	...	125.00	110.00	...	110.00	115.00	...	115.00
9. भूकंप विज्ञान और भूगर्भविज्ञान (सेज)	79.23	11.96	91.19	95.00	25.00	120.00	26.00	13.00	39.00	85.00	25.00	110.00
10. अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण लोक संपर्क (रीचआउट)	62.70	...	62.70	85.00	...	85.00	35.00	...	35.00	60.00	...	60.00
जोड़-केन्द्रीय क्षेत्र की स्कीमें/परियोजनाएं	949.40	105.21	1054.61	1165.00	172.00	1337.00	575.50	74.90	650.40	1018.17	163.00	1181.17
केंद्रीय क्षेत्र का अन्य व्यय												

(₹ करोड़)

स्वायत्त निकाय	वास्तविक 2019-2020			बजट 2020-2021			संशोधित 2020-2021			बजट 2021-2022		
	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़	राजस्व	पूंजी	जोड़
11. भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंफोइस)	21.80	...	21.80	26.50	...	26.50	22.60	...	22.60	24.50	...	24.50
12. राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (एन. आई. ओ.टी.)	50.78	...	50.78	51.51	...	51.51	43.00	...	43.00	49.25	...	49.25
13. राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं महासागर अनुसंधान केंद्र (एन. सी. ऐ. ओ.आर.)
14. राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (एनसीपीओआर), गोवा	19.00	...	19.00	24.79	...	24.79	21.72	...	21.72	24.00	...	24.00
15. भारतीय उष्ण कटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आई.आई.टी.एम.)	68.20	...	68.20	78.00	...	78.00	83.42	...	83.42	84.25	...	84.25
16. राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (ऐन सेस)	18.04	...	18.04	21.00	...	21.00	12.50	...	12.50	16.00	...	16.00
जोड़-स्वायत्त निकाय	177.82	...	177.82	201.80	...	201.80	183.24	...	183.24	198.00	...	198.00
अन्य												
17. वास्तविक वसूलियां	-12.54	...	-12.54
जोड़-केंद्रीय क्षेत्र का अन्य व्यय	165.28	...	165.28	201.80	...	201.80	183.24	...	183.24	198.00	...	198.00
कुल जोड़	1606.66	105.21	1711.87	1898.00	172.00	2070.00	1225.10	74.90	1300.00	1734.13	163.00	1897.13
ख. विकास शीर्ष												
आर्थिक सेवाएं												
1. समुद्र विज्ञान अनुसंधान	649.09	...	649.09	812.80	...	812.80	436.82	...	436.82	658.92	...	658.92
2. अन्य वैज्ञानिक अनुसंधान	67.62	...	67.62	98.20	...	98.20	45.60	...	45.60	72.80	...	72.80
3. सचिवालय- आर्थिक सेवाएं	36.52	...	36.52	44.00	...	44.00	35.86	...	35.86	42.00	...	42.00
4. मौसम विज्ञान	853.43	...	853.43	943.00	...	943.00	706.82	...	706.82	960.41	...	960.41
5. समुद्र विज्ञान अनुसंधान पर पूंजी परिव्यय	...	11.23	11.23	...	17.00	17.00	...	8.00	8.00	...	15.00	15.00
6. मौसम विज्ञान पर पूंजीगत परिव्यय	...	93.98	93.98	...	155.00	155.00	...	66.90	66.90	...	148.00	148.00
जोड़-आर्थिक सेवाएं	1606.66	105.21	1711.87	1898.00	172.00	2070.00	1225.10	74.90	1300.00	1734.13	163.00	1897.13
कुल जोड़	1606.66	105.21	1711.87	1898.00	172.00	2070.00	1225.10	74.90	1300.00	1734.13	163.00	1897.13

1. **सचिवालय:** यह बजट प्रावधान, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के विभागीय लेखा संगठन सहित पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिवालय व्यय के लिए अपेक्षित है।

2. **मौसम विज्ञान:** भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) मौसम विज्ञान, भूकंप विज्ञान तथा संबद्ध विषयों सहित संबंधित सभी मामलों में प्रधान सरकारी एजेंसी है। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं: (i) मौसम-वैज्ञानिक प्रेषण करना तथा मौसम-संवेदी कार्यक्रमों यथा कृषि, सिंचाई, विमानन, तीर्थयात्रा इत्यादि के दृष्टतम प्रचालन हेतु मौजूदा मौसम-वैज्ञानिक पूर्वानुमान सुधारा करना (ii) जान-माल को नुकसान पहुंचाने वाली प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं यथा उष्णदेशीय चक्रवात, धूल भरी आंध्रियों, भारी वर्षा तथा हिमपात, शीत लहर तथा लू इत्यादि की चेतावनी देना, तथा (iii) विशिष्ट उद्देश्यों हेतु प्रयोक्ता अनुकूल मौसम वैज्ञानिक सेवाएं प्रदान करने हेतु कृषि, जल विज्ञान, समुद्र-विज्ञान, वायु प्रदूषण निगरानी तथा पूर्वानुमान के क्षेत्रों में देश में अन्य वैज्ञानिक संगठनों के साथ सम्पर्क कायम रखना।

3. **समुद्रविज्ञानीय सर्वेक्षण (ओआरवी तथा एफओआरवी) तथा समुद्र सजीव संसाधन (एमएलआर):** केन्द्रीय हिन्द महासागर बेसिन तथा दक्षिणी महासागर सहित अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में सजीव एवं गैर-सजीव दोनों संसाधनों के अन्वेषण के लिए बहुविध महासागरीय अनुसंधान और सर्वेक्षण करने के लिए समुद्र वैज्ञानिक अनुसंधान जलयान (ओआरवी) सागर कन्या और मत्स्यिकी समुद्र-वैज्ञानिक अनुसंधान जलयान (एफओआरवी) –सागर सम्पदा प्रमुख प्लेटफॉर्म रहे हैं। समुद्री सजीव संसाधन (एमएलआर) कार्यक्रम का प्रारंभ गहरे समुद्र मात्स्यिकी संसाधनों का आकलन करने तथा भौतिक और जैविक अन्वेषणों को स्पष्ट करने के लिए किया गया था। भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र से दोहन योग्य संसाधन प्राप्त करने के लिए इन कार्यक्रमों के तहत आकलन सर्वेक्षण तथा मॉनीटरिंग कार्यक्रमों अत्यावश्यक हैं। समुद्री सजीव संसाधन तथा पारिस्थितिकी केन्द्र (सीएमएलआरई) ने उपग्रह तथा स्व-स्थाने डेटा का उपयोग करके भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र में 4.32 एमटीए की मत्स्य संभावना का व्यवस्थित रूप से अनुमान लगाया है।

4. **राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र (एन.सी.एम.आर.डब्ल्यू.एफ.):** राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र अनुसंधान, विकास के द्वारा भारत और पड़ोसी क्षेत्रों में बड़ी हुई विश्वसनीयता तथा सटीकता के साथ आधुनिक संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान प्रणालियों का निरंतर विकास कर रहा है और ज्ञान, कौशल तथा तकनीकी आधारों के उच्चतम स्तर को बनाए रखते हुए नवीन और नवोन्मेषी अनुप्रयोगों का प्रदर्शन करता है। राष्ट्रीय मध्यम अवधि पूर्वानुमान केंद्र की रियल-टाइम डाटा सम्मिश्रण प्रणाली रियल-टाइम सीमलैस मौसम पूर्वानुमान मॉडलों के लिए प्रारंभिक स्थितियां उत्पन्न करता है जो दिनों से लेकर सीजन तक के पूर्वानुमान को पूरा करती है और भारतीय मौसम विभाग के पूर्वानुमानकर्ताओं का मूल्यवान मार्गदर्शन करती हैं। एन.सी.एम. आर. डब्ल्यू. एफ. में चालित उच्च विभेदन वैश्विक और क्षेत्रीय एन्सेंबल पूर्वानुमान मॉडलों का उपयोग प्रचालनात्मक रूप से प्रतिकूल मौसम चेतावनी के लिए पूर्वानुमान देने के लिए किया जा रहा है।

6. **समुद्री सेवाएं, मॉडेलिंग, अनुप्रयोग, संसाधन और प्रौद्योगिकी (ओ-स्पाटी):** महासागर क्षेत्र से संबंधित कार्यक्रमों में शामिल हैं (i) भारत के आस-पास समुद्रों से समय-श्रृंखला डाटा की प्राप्ति के लिए महासागर प्रेक्षणीय नेटवर्क के सृष्ट को बनाए रखना और सुदृढ़ बनाना। यह नियमित निगरानी, उपग्रह डाटा के वैधीकरण और महासागरीय वायुमंडलीय मॉडलों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी लेने के लिए आवश्यक है। ये महासागर गतिकी, जलवायु परिवर्तनीयता, महासागर दशा पूर्वानुमान, समुद्री स्तर की विभिन्नता, महासागर फ्लक्स अध्ययन आदि की बेहतर समझ में मदद करती है। (ii) महासागर सूचना सेवाओं के सृष्ट, समुद्री सजीव संसाधनों की जैव-विविधता का मूल्यांकन, भारत के तटीय समुद्र के स्वास्थ्य की आवधिक निगरानी, तटीय समुद्री क्षेत्र का प्रबंधन, भारत और हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के लिए बुलेटिन जारी करने के लिए 24x7 घंटों के आधार पर प्रचालनात्मक सुनामी चेतावनी प्रणाली उपलब्ध कराती है (iii) अन्यन्य आर्थिक क्षेत्र में स्थलाकृतिक सर्वेक्षण करना और हिंद महासागर के गहरे समुद्री क्षेत्र में उपलब्ध खनिज संसाधनों का अन्वेषण करना। इसमें शामिल है। गैस हाईड्रेट्स पॉली-मैटालिक नोड्यूल हाइड्रो थर्मल सल्फाइड मिनरल, कोबाल्ट क्रस्ट जिसमें हिंद महासागर के मध्य महासागरीय क्षेत्र के साथ उपलब्ध बहुमूल्य नोबल धातुएं शामिल है। (iv) अनुसंधान और विकासात्मक गतिविधियों के लिए अनुसंधान जलयानों का संचालन और अनुरक्षण करना। (v) महासागरीय ऊर्जा, गहरा समुद्री खनन, तटीय पर्यावरणीय इंजीनियरिंग और समुद्री उपकरण के लिए महासागरीय प्रौद्योगिकी, सी-फ्रंट सुविधा का विकास, जलगत मानव रहित वाहनों का संचालन। दूर से संचालित अंतर्जलीय स्व-स्थाने मूदा परीक्षण और जलगत वाहनों का विकास किया गया।

7. **वायुमंडल और जलवायु अनुसंधान-मॉडेलिंग प्रेक्षण प्रणालियां तथा सेवाएं (एकरॉस):** यह कार्यक्रम (i) अनुवीक्षण कृषि, विमानन, शहर पूर्वानुमान, पहाड़ी क्षेत्र, रक्षा और खेल-कूद, देश में आपदाओं संपूर्ण हिमालय क्षेत्र के लिए समर्पित पूर्वानुमान प्रणाली के साथ-साथ व्यापक रेंज प्रदान करने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वायुमंडलीय प्रेक्षण प्रणालियों को बनाए रखना और सुदृढ़ीकरण करना (ii) प्रतिकूल मौसम, जैसे कि चक्रवात, भारी वर्षा, तूफान, बाढ़, लू, धुंध और वायु गुणवत्ता, एयरोसोल और बादलों की सूक्ष्म भौतिकीय विशेषताएं और संबंधित पर्यावरणीय स्थितियों के विशिष्ट पूर्वानुमान सहित अल्प और मध्यम रेंज से लेकर मौसमी पैमाने के विभिन्न समय और स्थान पैमाने पर भारत में मानसून मौसम और जलवायु के पूर्वानुमान के लिए अपेक्षित वायुमंडलीय मॉडलों के सृष्ट के विकास के लिए पारंपरिक और अपारंपरिक दोनों आकड़ों का सम्मिश्रण करना (iii) जल के अनेक क्षेत्रीय परिदृश्यों का सृजन करने के लिए जलवायु परिवर्तन अनुसंधान करना, जलवायु दीर्घकालिक (मल्टी डीकेडल) सिमुनेशन के कारण जलवायु अन्य सेवाएं, जल चक्र और पौलियो-क्वलाइमेटिक अध्ययन की समझ बढ़ाने के लिए अनुसंधान करना। (iv) सभी मॉडलिंग गतिविधियों, पूर्वानुमान सृजन, डाटा केंद्र और डाटा वित्पण, पर्यावरणीय प्रेक्षणों के लिए वायुवाहित प्लेटफार्म सुविधाओं के लिए का चौबीसों घंटे संचालन और रखरखाव करना।

8. **ध्रुवीय विज्ञान और क्रायोस्फियर (पेसर):** यह कार्यक्रम, अंटार्कटिक, आर्कटिक तथा दक्षिणी महासागर और हिमालय पर विशेष बल देते हुए, ध्रुवीय तथा हिमामंडल से संबंधित विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए तैयार किया गया है। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं- (i) ध्रुवीयक्षेत्र और आस-पास के महासागरों में देश के सामरिक और वैज्ञानिक हितों को सुनिश्चित करना (ii) आर्कटिक, अंटार्कटिका, हिमालय और दक्षिणी महासागर में दीर्घकालिक फ्रंटलाइन वैज्ञानिक कार्यक्रमों को जारी रखना (iii) वार्षिक भारतीय अंटार्कटिक, आर्कटिक, हिमालयी, दक्षिणी महासागर अभियानों की योजना बनाना, समन्वय और कार्यान्वयन करना। (iv) अंटार्कटिक, आर्कटिक और हिमालय में भारतीय अनुसंधान बेस का अनुरक्षण करना और (v) देश में अत्याधुनिक ध्रुवीय अनुसंधान एवं लाजीस्टिक केन्द्रों की स्थापना करना।

9. **भूकंप विज्ञान और भूगर्भविज्ञान (सेज):** इस प्रोग्राम के कार्य हैं: (i) भूकंप और सम्बद्ध विषयों भूकंप-खतरा आकलन और सूक्ष्म-क्षेत्रीकरण को मॉनिटर करने और सूचना उपलब्ध कराने के लिए भूकंप विज्ञानी प्रेक्षण प्रणालियों को कायम रखना एवं सुदृढ़ बनाना, (ii) भूकंप-विज्ञान, सालिड-अर्थ और भूविज्ञान से संबंधित अनुसंधान, (iii) भू-गतिकी और सतही प्रक्रियाएं, (iv) कोयना, वरना क्षेत्र में गहरा वेध छिद्र अन्वेषण (v) समुद्री भू-वैज्ञानिक अध्ययन, सबसे बड़े जियोइड लो का अध्ययन, एकीकृत महासागर वेधन कार्यक्रमों के माध्यम से गहरा-सागर वेधन तथा इतिहास तथा जलवायु विचलनों के पुनः निर्माण अपक्षरण की दर के लिए संबंधित अध्ययन, (vi) भू-कालानुक्रमिक सुविधा की स्थापना तैयार करना।

10. **अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण लोक संपर्क (रीचवाउट):** प्रौद्योगिकी विकास सहित पृथ्वी प्रणाली विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अकादमिक/अनुसंधान संगठनों को अतिरिक्त मूल सहयोग प्रदान करना, (ii) बहु-संस्थागत एवं बहु-विषयात्मक वैज्ञानिक विशेषज्ञता के एकीकरण के माध्यम से राष्ट्रीय महत्व के क्षेत्रों में केंद्रित अनुसंधान को बढ़ावा देना, (iii) राष्ट्रीय सुविधाओं की स्थापना में सहायता प्रदान करना, (iv) चेर प्रोफेसर्स, एम.टेक पाठ्यक्रमों सहित क्षमता निर्माण, ईएसटीसी सेल की स्थापना, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की सेवाओं के आर्थिक लाभ का आकलन (v) बंगाल की खाड़ी में बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग संगठन पहल (बीआईएमएसटीईसी) के सदस्य देशों का प्रशिक्षण, (vi) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संबंधित संयुक्त क्रियाकलाप, (vii) मेलों/प्रदर्शनियों में भागीदारी के माध्यम से जागरूकता और आउटरीच कार्यक्रम करना, विशिष्ट दिवसों को मनाना, पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संबंधी क्षेत्रों में कार्यशालाओं/समिनारों/संगोष्ठियों को बढ़ावा/सहयोग देना। (viii) पृथ्वी प्रणाली विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय अनुसंधान फेलो कार्यक्रम में कुशल जनशक्ति का विकास (ix) अंतर्राष्ट्रीय प्रचालनात्मक मौसम विज्ञान प्रशिक्षण केन्द्र और (x) पृथ्वी प्रणाली विज्ञान नॉलेज रिसोर्स प्रणाली का सृजन और नॉलेज रिसर्च केंद्र नेटवर्क (के.आर.सी) की स्थापना करना।

11. **भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंकोइस):** यह सतत महासागर प्रेक्षणों के माध्यम से और प्रणाली-बद्ध एवं केंद्रित अनुसंधान के माध्यम से निरंतर सुधार करके समाज, उद्योग, सरकार और वैज्ञानिक समुदाय को समुद्री सूचना और परामर्शी सेवाएं प्रदान करना है।

12. **राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (एन. आई. ओ.टी.):** पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत एनआईओटी को शुरू करने का प्रमुख लक्ष्य भारत के भूमि क्षेत्रफल के लगभग दो तिहाई भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में सजीव और निर्जीव संसाधनों के दोहन से जुड़ी विभिन्न इंजीनियरिंग समस्याओं को हल करने के लिए विश्वसनीय स्वदेशी प्रौद्योगिकी का विकास करना है।

14. **राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (एनसीपीओआर), गोवा:** एनसीपीओआर प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संस्थान है, जो ध्रुवीय और दक्षिणी महासागर क्षेत्रों में किए जाने वाले देश के अनुसंधान क्रियाकलापों के लिए उत्तरदायी है। संस्थान के प्रमुख उद्देश्य ध्रुवीय और महासागर विज्ञान, भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, अरब सागर में विस्तारित महाद्वीपीय शेल्फ और गहरा सागर वेधन आदि करना है।

15. **भारतीय उष्ण कटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आई.आई.टी.एम.):** आईआईटीएम मौसम और जलवायु पूर्वानुमान के सुधार के लिए अपेक्षित महासागर-वायुमंडल जलवायु प्रणाली से संबंधित मूलभूत अनुसंधान और दीर्घावधि पूर्वानुमान के लिए पृथ्वी प्रणाली मॉडल के विकास का कार्य तथा जलवायु परिवर्तन परिदृश्यों के प्रेक्षण का कार्य करता है। इन लक्ष्यों को संबंधित वैज्ञानिक कार्यक्रमों (प्रेक्षणों और मॉडलिंग सहित) को पूरा करके महासागर- वायुमंडल में आधुनिक अनुसंधान के माध्यम से तथा उत्कृष्ट अनुसंधान और प्रतिभा के लिए मानव संसाधन विकास की निरंतर प्रक्रिया के साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग द्वारा प्राप्त किया जाता है।

16. **राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (ऐन सेस):** एनसीईएसएस, सालिड अर्थ विज्ञान के उभरते हुए क्षेत्रों में बहु-विषयात्मक अनुसंधान करता है, पृथ्वी विज्ञान अनुप्रयोगों के लिए इस ज्ञान का उपयोग करके सेवाएं प्रदान करता है तथा चुनिंदा क्षेत्रों में नेतृत्व क्षमताओं का निर्माण करता है।